कुलगीत

शुभ्रकांति, विभूतिमय, विद्यारविंद, सतोगुणी।
हिन्दू कन्या महाविद्यालय है सर्व शिरोमणि।

सभ्यता, संस्कार, संस्कृति का है आदि स्तम्भ ये।
ज्ञान ही मेधा का आभूषण यहां प्रारम्भ से।
आत्मजा के मान और दीक्षा का है आलम्ब ये।
श्रीप्रदा-चरणों का करता आचमन नित यह मुनि।
हिन्दू कन्या महाविद्यालय है सर्व शिरोमणि।

कुश, कुसुम, कलरव औ' किसलय का कलित निर्मल निलय।
कला और विज्ञान, वाणिज्यादि का अद्भुत विलय।
पाक की सौंधी महक और नृत्य, गीत की मधुर लय।
वसुन्धरा से व्योम तक के ज्ञान की यहां प्रतिध्वनि।
हिन्दू कन्या महाविद्यालय है सर्व शिरोमणि।

साध, साधन, साध्य और साधक यहीं करते भ्रमण।

उत्कर्ष इसका शीर्ष है, संवेदना इसके चरण।
व्याकुल पिपासा ज्ञान की पाये सुधा और चिर शरण।
दे सिद्धि और प्रसिद्धि, हम वरदा बनें, नारायणी।
हिन्दू कन्या महाविद्यालय है सर्व शिरोमणि।

है नमन इसके कर्म को।
है नमन इसके धर्म को।
करें 'अंजलि' भर पुष्प अर्पण विद्या के देवालय को।
है नमन शिक्षाकुंज हिन्दू कन्या महाविद्यालय को।

शब्द- रचना:
अंजलि गुप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जींद।